डा. पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि "जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों का शिल्पगत अध्ययन" इस शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : ३ जून, २००० .

(डा. पांडुरंग पाटील)
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur-416004.

डा. हिंदुराव साळुंखे
एम्.ए., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
छत्रपति शिवाजी महाविद्यालय,
सातारा।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री. विजयकुमार भागवत चौधरी ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों का शिल्पगत अध्ययन" मेरे मार्गदर्शन में पूरा किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : ३ जून, २०००

शोध निर्देशक

हिंदुराव साळुंखे

(डा. हिंदुराव साळुंखे)

प्रख्यापन

''जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों का शिल्पगत अध्ययन''

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी सर्वथा मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 3 जून, 2000 .

शोध-छात्र

विजयकुमार चौधरी

(विजयकुमार भागवत चौधरी)

प्राक्कथन

प्रेरणा -

मैं देहात का रहनेवाला हूँ। देहात के मेले में जो नाटक प्रदर्शित किए जाते थे उसे मैं बचपन से देखता था। बड़ा होने के बाद मैंने मराठी रंगमंच के कुछ नाटकों में अभिनय भी किया। प्रारंभ से ही मुझे नाटकों में रूचि रही है। बी. ए. भाग-दो की पढ़ाई करते वक्त मैंने जगदीशचंद्र माथुर के 'कोणार्क' नाटक का अध्ययन किया था। उससे मैं काफी प्रभावित हो गया था। उसी समय मेरे मन में जगदीशचंद्र माथुर के साहित्य को जानने की अभिलाषा निर्माण हुई थी।

एम्. ए. की उपाधि हासिल करने के बाद मैंने एम्. फिल. में प्रवेश लिया। नाटक एवं रंगमंच में रूचि होने के कारण मैंने अध्ययन के लिए 'नाट्य-विधा' का चयन किया। जगदीशचंद्र माथुर के साहित्य के प्रति रूचि होने के कारण नैंने अपने एम्. फिल. के लघु-शोध प्रबंध के लिए 'जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों का शिल्पगत अध्ययन' यह विषय चुना।

माथुर के नाटकों का अध्ययन करते वक्त मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न थे -

1. जगदीशचंद्र माथुर का जीवन कैसा है ?
2. जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों का मूल विषय क्या है ?
3. जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों के पात्र किस प्रकार के हैं ?
4. जगदीशचंद्र माथुर के नाटक अभिनय की दृष्टि से कैसे हैं ?
5. जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों का उद्देश्य क्या है ?
6. वर्तमान युग की सामाजिक समस्याओं की दृष्टि से माथुर के नाटकों का महत्त्व क्या है ?

अध्ययन के उपरांत मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में लिखा है।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघुशोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय में जगदीशचंद्र माथुर के जीवन का परिचय दिया है। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, माता-पिता, जन्म तथा बचपन, संस्कार और शिक्षा-दीक्षा, घरेलू वातावरण, कला की रूचि साथ ही उनकी नौकरियाँ, उनका अन्य क्षेत्र से संबंध और उनकी रचनाएँ इन सभी का विवरण दिया है।

द्वितीय अध्याय में मैंने जगदीशचंद्र माथुर के 'कोणार्क' , 'पहला राजा' तथा 'शारदीया' इन नाटकों का वस्तुशिल्प चित्रित किया है। नाटकों की कथावस्तु के अंतर्गत कथावस्तु के आधार, कथावस्तु के प्रकार, कथावस्तु के रूप, कथावस्तु में आई हुई अर्थप्रकृतियाँ, कार्यावस्थाएँ और संधियाँ इनके अनुसार अध्ययन किया है ।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत जगदीशचंद्र माथुर के 'कोणार्क', 'पहला राजा' तथा 'शारदीया' इन नाटकों के पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। उस में नायक, नायिकाओं के भेद, प्रतिनायक और गौण पात्र इनके अनुसार अध्ययन किया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत जगदीशचंद्र माथुर के 'कोणार्क', 'पहला राजा' और 'शारदीया' इन नाटकों के कथोपकथन और देशकाल तथा वातावरण किस प्रकार है इसका विवेचन किया है। कथोपकथन का कथोपकथन के गुणों के आधार पर तथा देशकाल वातावरण का आंतर्बाह्य वातावरण और परिस्थितियों के आधार पर अध्ययन किया है।

पंचम् अध्याय के अंतर्गत जगदीशचंद्र माथुर के 'कोणार्क', 'पहला राजा' और 'शारदीया' इन नाटकों में अभिनेयता और उद्देश्य इसका विवेचन किया है। अभिनेयता के अंतर्गत अभिनेयता के प्रकारों के अनुसार अध्ययन किया है।

अंत में उपसंहार दिया है जिसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक पद्धति से निकाले गए निष्कर्ष दर्ज हैं। अंत में आधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को संपन्न बनाने में जिन विद्वानों तथा ग्रंथालयों ने सहायता की है, उन सब के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य मानता हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरूवर्य डा. हिंदुराव सहुंखे जी के प्रेरणादायी निर्देशन का फल है। उनके प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा स्नेह के कारण ही यह कार्य पूरा हुआ। अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने मेरे अनुसंधान कार्य को निरंतर गतिशील रखा। उन्होंने मेरी अस्मिता को जो ज्ञान दृष्टि दी अगर मैं उसे जीवन में सजग रखा तो वह उनके प्रति मेरा आभार प्रदर्शन होगा।

आदरणीय गुरूवर्य डा. पांडुरंग पाटील, डा. वसंत मोरे, डा. अर्जुन चव्हाण, प्राचार्य भागवत आडसुळ तथा कर्मवीर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय (चारे) के मेरे सभी सहयोगी अध्यापक आदि का समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्शन मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ाता रहा। इन सभी का मैं हृदय से आभारी हूँ।

मेरे माता-पिता का वात्सल्य और आशीर्वाद मेरे जीवन की अमूल्य पूँजी है। मेरे पूज्य पिताजी इस संसार में नहीं रहे किंतु मेरे इस रचनात्मक क्षण में मैंने उनके सामिप्य का अनुभव किया है। पूजनीय माताजी जनाबाई की प्रबल इच्छा एवं शुभाशीर्वाद से ही लघु शोध-प्रबंध ने आकार धारण किया। अत: माता-पिता के प्रेम से तो मैं कभी उऋण नहीं हो सकता, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मात्र औपचारिकता निभाना नहीं है वह मेरी नैतिक जिम्मेदारी भी है।

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्णता में मेरी जीवनसंगिनी सौ. रामेश्वरी और भाई अजयकुमार इनका भी श्रेय है, जिन्होंने मुझे पारिवारिक चिंताओं से मुक्त रखकर हमेशा प्रोत्साहित किया।

मेरे मित्र परिवार के सदस्य डा. संजय नवले, गिरीश काशीद, अशोक बाचुळकर, मिलिंद साळवे, शिंदे, शेख, कासार, आदि की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मुझे निरंतर मिलता रहा अत: मैं उनका आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक पुस्तकें बॅरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर और श्री. शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी के ग्रंथालयों से प्राप्त हो सकी। अत: उन ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को सुचारू रूप में टंक-लेखन करनेवाले अल्ताफ मोमीन, (कोल्हापुर) का भी मैं आभारी हूँ।

अंत में सभी गुरूजनों, सहृदयों एवं आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए पुन:श्च धन्यवाद।

अनुक्रमणिका

अ.नं.	अध्याय का नाम	पृ. क्र.
1.	***प्रथम अध्याय*** - जगदीशचंद्र माथुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।	1-12
2.	***द्वितीय अध्याय*** - आलोच्य नाटक - 'कोणार्क', 'पहला राजा' और 'शारदीया' नाटकों का वस्तुशिल्प।	13-43
3.	***तृतीय अध्याय*** - आलोच्य नाटकों में चरित्र-चित्रण।	44-82
4.	***चतुर्थ अध्याय*** - आलोच्य नाटकों में कथोपकथन और देशकाल-वातावरण।	83-121
5.	***पंचम् अध्याय*** - आलोच्य नाटकों में अभिनेयता तथा उद्‌देश्य ।	122-150
	उपसंहार /	151-159
	संदर्भ ग्रंथ सूची /	160-161